Date
02/09/2020

Dr. Raj Gopal
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.

Nyaya Classification of Perception (Lecture-2)
(प्रत्यक्ष का वर्गीकरण)

न्याय-भाष्य दर्शन के अनुसार प्रत्यक्ष का वर्गीकरण दो वर्गों में हुआ है। अतः प्रत्यक्ष के दो भेद हैं। (i) लौकिक प्रत्यक्ष (ii) अलौकिक प्रत्यक्ष। प्रत्यक्ष इन्द्रियों के साथ वस्तु के संपर्क को कहा जाता है। जब इन्द्रियों का वस्तु से साधारण संपर्क होता है, तब उस प्रत्यक्ष को लौकिक प्रत्यक्ष कहते हैं। जब इन्द्रियों का वस्तु के साथ असाधारण ढंग से प्रत्यक्ष होता है तब उसे अलौकिक प्रत्यक्ष कहते हैं। अलौकिक प्रत्यक्ष में इन्द्रियों का वस्तु से असाधारण संपर्क होता है।

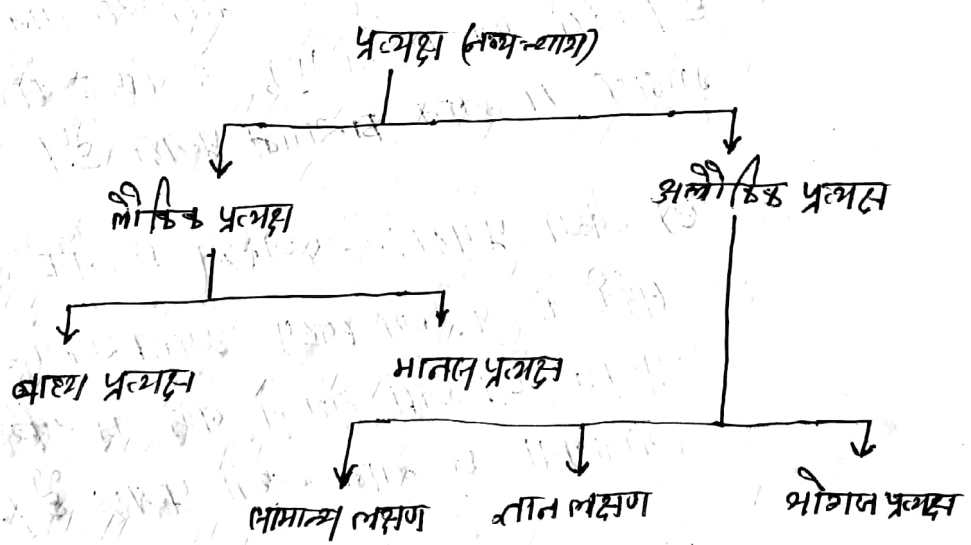

लौकिक प्रत्यक्ष :⇒ लौकिक प्रत्यक्ष को दो वर्गों में विभक्त किया गया है। (i) बाह्य प्रत्यक्ष (ii) मानस प्रत्यक्ष

(i) बाह्य प्रत्यक्ष :- जब बाह्य इन्द्रियों का वस्तु के साथ संपर्क होता है तब उस संपर्क से जो प्रत्यक्ष होता है उसे बाह्य प्रत्यक्ष कहते हैं। बाह्य ज्ञानेन्द्रिय पाँच है। इसलिए बाह्य प्रत्यक्ष भी पाँच प्रकार का होता है।

Scanned with CamScanner

(a) चाक्षुष प्रत्यक्ष :- आँखों का वस्तु से संपर्क होने से उत्पन्न रूप ज्ञान चाक्षुष प्रत्यक्ष है। जैसे आँख एवं टेबुल के संपर्क से उत्पन्न टेबुल-ज्ञान चाक्षुष प्रत्यक्ष है।

(b) श्रावण प्रत्यक्ष :- कान का उसके विषय के साथ-संपर्क से उत्पन्न शब्द ज्ञान श्रावण प्रत्यक्ष है। जैसे, कान का ध्वनि के साथ संपर्क से प्राप्त किसी वस्तु के ध्वनि का ज्ञान श्रावण प्रत्यक्ष है। जैसे घंटी की आवाज मधुर है।

(c) घ्राणज प्रत्यक्ष :- सूँघकर जो ज्ञान प्राप्त किया जाता है उसे घ्राणज प्रत्यक्ष कहते हैं। जैसे : गुलाब के खुशबू का ज्ञान।

(d) रासन प्रत्यक्ष :- रसनेन्द्रिय अर्थात जिह्वा का उसके विषय के साथ संयोग से प्राप्त रस ज्ञान रासन प्रत्यक्ष है। जैसे जिह्वा का मधु के संपर्क से प्राप्त उसकी मिठास का ज्ञान रासन प्रत्यक्ष है।

(e) त्वचा प्रत्यक्ष :- स्पर्शेन्द्रिय का उसके विषय के साथ संपर्क के परिणाम स्वरूप उत्पन्न स्पर्श ज्ञान त्वचा प्रत्यक्ष है। जैसे हाथ से बर्फ का स्पर्श होने पर शीतलता का ज्ञान त्वचा प्रत्यक्ष है।

मानस प्रत्यक्ष :- मानसिक भावों के साथ मन का संयोग होने पर दु:ख, इच्छा और संकल्प का जो ज्ञान होता है उसे मानस प्रत्यक्ष कहते हैं। जहाँ बाह्य इन्द्रिय पंचभूतों से निर्मित होने के कारण अनित्य है। परन्तु मन निरवयव होने के कारण नित्य है।

Scanned with CamScanner